कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नही लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ✓

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 18-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।164/2018

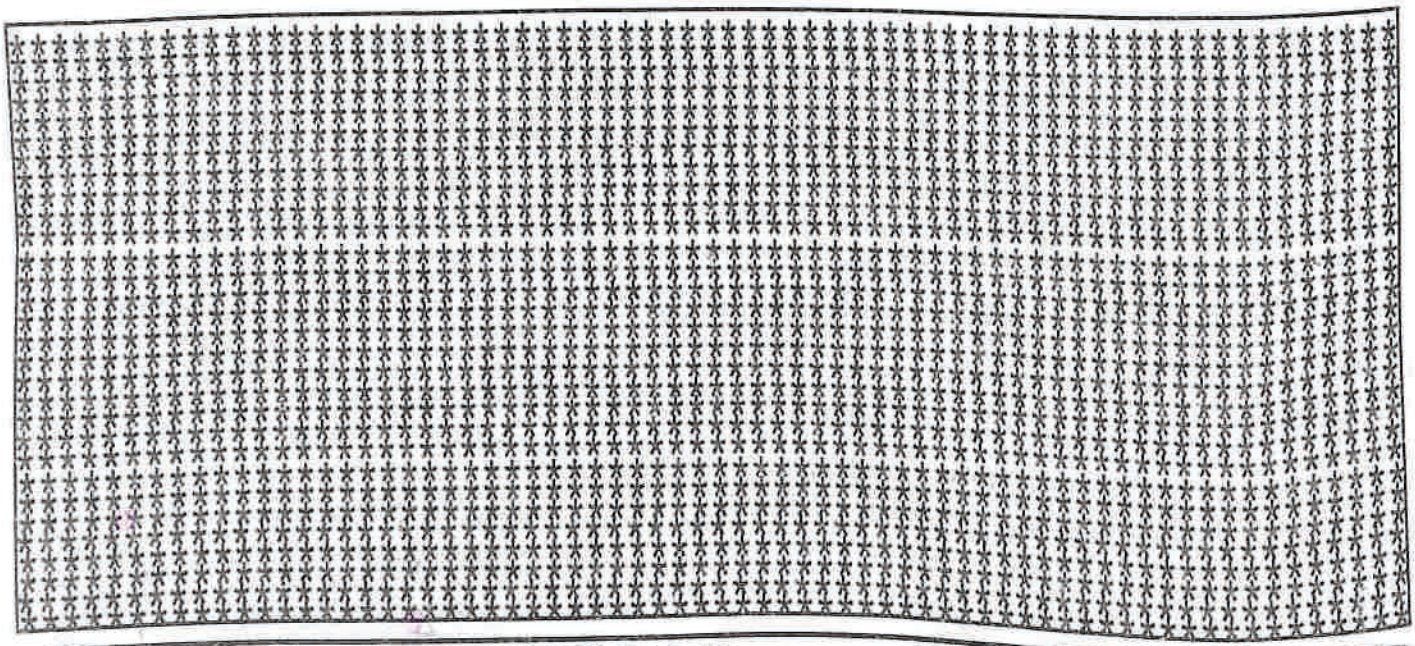

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 1 उत्तर:- स्वामिनो - - - - - - - - - - - - - - - - कारिता - ।

प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के 'कर्मयोगी स्वामी केशवानन्दः' नामक पाठ से लिया गया है। यह पाठ डॉ॰ विक्रमजीत द्वारा संकलित है।

इसमें संकलनकर्ता ने स्वामि केशवानन्दः के गुणों का वर्णन किया है। इसमें उनके जीवन के कार्य व आदर्शों को बखूबी स्पष्ट किया गया है।

हिन्दी-अनुवाद :-

इसमें स्वामी केशवानन्द के जीवन के बारे में बताते हुए कहा गया है कि स्वामी केशवानन्द का जीवन सर्वपन्थ सद्भावना का निर्देशन था। अर्थात् उनके जीवन से सभी पन्थों के प्रति समान आदर रखने की सीख मिलती है।

स्वामी केशवानन्द निश्चित रूप से जाट-जाति में उत्पन्न हुए थे; परन्तु वे सिखों के गुरु नानक देव के पुत्र श्रीचन्द्र द्वारा प्रवर्तित उदासी-सम्प्रदाय में दीक्षित हो गये अर्थात् उन्होंने सिक्ख धर्म अपना लिया, वे 'गुरुग्रंथ साहिब' के उत्तम पाठी हो गये अर्थात् इस ग्रंथ को पढ़ने मे महारत हासिल कर ली।

स्वामी केशवानन्द ने ग्यारह वर्षो तक साधना की और सात सौ पृष्ठों के सिक्खों के इतिहास का लेखनकार्य किया। देश के विभाजन के समय हिंसा आदि से पीड़ित मुस्लिम भाइयों की चिकित्सा का कार्य भी किया। इससे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उनके सभी धर्मों के प्रति आदर की भावना उजागर होती हैं।

विशेषः-

(i) स्वामी केशवानन्द के जीवन को प्रेरणादायी बताया गया हैं।

(ii) वर्णनात्मक शैली व सरल भाषा का प्रयोग हुआ हैं।

प्र० 2

अर्थः- मरुः सुवर्णो .... सुग्याः ॥

अन्वयः-

सुवर्णः मरुः येन न हि दृष्टः तेन कुहचित् सुदृश्यम् किम् दृष्टम् ? ये सुमेरुशृंगाः मरौ स्फुटम् भान्ति कृष्णासु शिलासु ते न हि सुग्याः।

प्रसङ्गः-

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी संस्कृत पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के 'मरुसौन्दर्यम्' नामक गीतिकाव्य से लिया गया हैं। यह गीतिकाव्य डॉ० विद्याधर शास्त्री द्वारा रचित 'हरनामामृतम्' नामक ग्रंथ से संकलित हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

इसमें कवि ने मरुस्थल भूमि की सुन्दरता का वर्णन करते हुए मरुस्थल को सुमेरू पर्वत के समान अत्यन्त सुन्दर बताया है।

हिन्दी अनुवाद :-

कवि मरुस्थल भूमि की सुन्दरता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जिस मनुष्य ने सुनहरा मरुस्थल नहीं देखा है, उसने कहीं पर सुन्दर दृश्य क्या देखा है? अर्थात् उसने कोई भी सुन्दर दृश्य नहीं देखा है। सुनहरा मरुस्थल सबसे सुंदर दृश्य वाला स्थान है।

जो सुमेरूपर्वत की सुंदर चोटियाँ मरुस्थल में स्पष्ट सुशोभित होती हैं, उस स्पष्टता की खोज पर्वतों की उन काली-काली चट्टानों में नहीं की जा सकती है। भाव यह है कि मरुस्थल के सुनहरे टीले सुमेरूपर्वत की सुनहरी चोटियों के समान हैं। इस सुन्दरता या स्पष्टता को अन्य कहीं भी नहीं खोजा जा सकता है।

विशेष :-

(i) इसमें मरुस्थल की सुन्दरता को स्पष्ट करते हुए उसे सुमेरूपर्वत के समान सुन्दर बताया है।

(ii) इसमें सरल, सुन्दर व भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 3
उत्तर:- त्वमसि -- भरणा ॥

<u>अन्वय</u>:-
त्वम् शरण्या, त्रिभुवनधन्या, सुरमुनिजनैः वन्दित चरणा, नवरस मधुरा, कविता मुखरा, स्मित रुचिः, रुचिराभरणा च असि।

<u>प्रसङ्ग</u>:-
प्रस्तुतोऽयम् पद्यांशः अस्माकम् पाठ्यपुस्तकात् 'स्पन्दनायाः' 'जय सुरभारति!' इति गीतिकायाः सङ्कलितोऽस्ति अस्याः गीतिकायाः रचयिता डॉ० हरिराम आचार्य अस्ति।
अस्मिन् पद्यांशे वाक् देव्याः विशिष्टताम् वर्णनम् विहितम्, रचनाकारः तम् शरणदात्री इत्यादिनां उपमानां शोभितम् करोति।

<u>संस्कृत-व्याख्या</u>:-
कविः डॉ० हरिराम आचार्यः सरस्वतीदेव्याः वैशिष्ट्यम् वर्णयन् कथयति यत् हे देवि! त्वम् शरणदात्री असि, त्वम् त्रिषु लोकेषु श्रेष्ठा असि, त्वम् नित्यम् सुरैः मुनिजनैश्च पूजनीया असि, त्वम् नवैः रसैः युक्ता सुन्दरकाव्यस्य रचयिता असि।
त्वम् कवितायाः रूपे मुखरिता जाता, त्वम् मन्दहासयुक्ता असि तथा त्वम् विविधैः आभूषणानि सज्जिता असि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विशेष :-

(i) अस्याः गीतिकायाः भाषा सरला सुबोधा चास्ति ।

(ii) अस्मिन् पद्यांशे देवी सरस्वत्याः विशेषतायाः वर्णनम् विहितम् ।

प्र० 4 उत्तर: बालः - जृम्भस्व - दर्शयति) ॥

प्रसङ्ग :-

प्रस्तुतोऽयं नाट्यांशः अस्माकम् पाठ्यपुस्तकात् 'स्पन्दनायाः' 'जृम्भस्व सिंह! दन्तास्ते गणयिष्ये' इति नाटकात् संकलितोऽस्ति । अयं मूलतो महाकवि कालिदासेन विरचितात् 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' इति नाटकस्य अंशो विद्यते ।

अस्मिन् नाट्यांशे बालकस्य सर्वदमनस्य क्रीडा, तस्य तापसीभ्याम् सह संवादः प्रस्तूयते ।

संस्कृत-व्याख्या :-

सर्वदमनः :- अरे सिंह! मुखम् प्रसारय । अहम् तव दन्तान् गणना करिष्यामि ।

प्रथमा तपस्विनी :- अरे निर्दयी! त्वम् अस्माकम् सन्तानतुल्यानि जन्तूनि किमर्थम् ताडयसि ? अरे! तव

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

क्रोधः तु वृद्धिं करोति, अस्मिन् स्थले नूनम् ऋषिजनैः तव नाम सर्वदमनः इति उचितमेव कुर्वन्तः।

द्वितीया तपस्विनी :- यदि त्वम् सिंहन्याः सुतम् न मोचयसि तदा सिंहनी नूनम् त्वाम् आक्रमणं करिष्यति।

सर्वदमनः :- (मन्दहासयुक्तम्) अरे! अहम् तु महत भीतः जातः!
(इति कथयित्वा ओष्ठान् दर्शयति)

विशेष :-
(i) बालकस्य सर्वदमनस्य बालक्रीडायाः वर्णनम् विहितम्।
(ii) अस्य नाट्यांशस्य भाषा सुबोधा सुशोभिता बोधगम्या चास्ति।

प्र० 5 उत्तर:-
(i) सर्वदमनस्य मणिबन्धे रक्षाकरण्डकम् आबद्धम् आसीत्।

(ii) कस्तूरी मृगात् जायते।

(iii) 'लोकहितम् मम करणीयम्' इति गीतस्य रचनाकारः डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकरः अस्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv.) पञ्चतन्त्रस्य रचना पण्डित विष्णुशर्मणा कृता ।

(vi) सर्वे प्राणिनः प्रियवाक्यप्रदानेन तुष्यन्ति ।

(viii) काव्येषु नाटकम् रम्यम् उच्यते ।

प्र०6
उत्तरः- प्रश्नः → ततस्तम् कः भूत्वा दृशति ?

प्र०7
उत्तरः- प्रश्नः → भवान् किम् वदति ?

प्र०8
उत्तरः- प्रश्नः → कस्य सदा विजय एव भविष्यति ?

प्र०9
उत्तरः- प्रश्नः → मेघान् कुत्र अवलोक्य नन्दामि ?

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 10
उत्तरः- पृथिव्याम् त्रीणि रत्नानि जलमन्नम् सुभाषितम्,
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥1॥

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः,
तस्मात्तदेव वक्तव्यम् वचने का दरिद्रता ॥2॥

प्र० 11
उत्तरः- (क) शीर्षकः- परोपकारस्य महत्वम्,

(ख)
(i) सर्वे स्वार्थम् समीहन्ते,
(ii) गावः अन्येभ्यः दुग्धम् प्रयच्छन्ति,
(iii) नदी स्वजलम् न पिबति,
(iv) स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनम् एव वरम् विद्यते,
(v) 'परेषाम् उपकारः' इति परोपकारः,

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ग)

(i) कर्तृपदम् :- वृक्षाः ।

(ii) सर्वनामपदम् :- सर्वे ।

(iii) विशेषणपदम् :- मातृसमा ।

(iv) विशेष्यपदम् :- जीवनम् ।

प्र० 12
उत्तर :-

पद	सन्धि-विच्छेदः	सन्धेः नाम
महर्षिः	महा + ऋषिः	गुण स्वर सन्धि
(i) शिवोऽहम्	शिवो + अहम्	पूर्वरूप स्वर सन्धि
(ii)		

प्र० 13
उत्तर :-

पद	सन्धिः	सन्धेः नाम
गै + अकः	गायकः	अयादि स्वर सन्धि
(i) शिवस् + च	शिवश्च	श्चुत्व व्यंजन सन्धि
(ii)		

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 14 उत्तरः-

	पद	समास / समासविग्रहः	समासस्य नाम
(i)	किशालभवनम्	किशालम् च तत् भवनम्	कर्मधारय समास
(ii)	भरतशत्रुघ्नौ	भरतः च शत्रुघ्नः च	द्वन्द्व समास
(iii)	दिनं दिनं प्रति	प्रतिदिनम्	अव्ययीभाव समास।

प्र० 15 उत्तरः-

	रेखाङ्कित पद	विभक्तिः	विभक्तेः कारणम्
(i)	जलम्	द्वितीया	'विना' शब्द योगे
(ii)	शिवाय	चतुर्थी	'नमः' शब्द योगे
(iii)	मन्दिरम्	द्वितीया	'उपर्युपरि' शब्द योगे।

प्र० 16 उत्तरः-

(i) श्रीधरः धनी आसीत्।
(धन + इनि)

(ii) शिक्षिका: बालाः पाठम् पाठयति।
(शिक्षक + टाप्)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 17 उत्तरः- पद प्रकृति + प्रत्यय

(i) बुद्धिमती बुद्धि + मतुप् (स्त्रीलिङ्ग)

(ii) पार्वती पर्वत + ङीप् ।

प्र० 18 उत्तरः- मञ्जूषा:- इतस्ततः, अद्यैव, वृथा, श्वः

(i) अहम् (i) श्वः देहलीम् गमिष्यामि ।

(ii) तृणानि (ii) इतस्ततः विकीर्णानि आसन् ।

(iii) वयम् (iii) अद्यैव कार्यम् सम्पादयामः ।

प्र० 19 उत्तरः- जनेन ग्रामः गम्यते ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 20
उत्तरः भगिनी वस्त्रम् प्रक्षालयति ।

प्र० 21
उत्तरः अहम् नगरम् गच्छामि ।

प्र० 22
उत्तरः (i) महेशः रात्रौ सपाद दशवादने शयनं करोति ।

(ii) 'शताब्दी' रेलयानम् पादोन दशवादने जयपुरात् देहलीं गच्छति ।

प्र० 23
उत्तरः

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(i) कृषकः प्रातः हैलस्य प्रति गच्छति ।	→ कृषकः प्रातः हैलम् प्रति गच्छति ।
(ii) हट्टे प्रयः महिलाः वस्तूनि क्रीणन्ति ।	→ हट्टे त्रिंशत् महिलाः वस्तूनि क्रीणन्ति ।
(iii) अहम् रोटिका खादामि ।	→ अहम् रोटिकाम् खादामि ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 24 उत्तर:-

सुनगरम्
मार्च
18 2019

प्रियमित्र ! कवीन्द्र !

कुशली सन् कुशलम् कामये, मा० शि० बोर्डपरीक्षा सन्निकटे वर्तते, अहम् समयसारिणीम् निर्माय (i) योजनया अधीयानः अस्मि, अधुना (ii) मम परिजनाः अपि मम सहयोगे रताः सन्ति, गुरवः सर्वोत्तमान् (iii) अङ्कान् प्राप्तुम् विद्यालये विशेषकक्षा सञ्चालयन्ति, ममापि (iv) लक्ष्यम् तदेव वर्तते (v), भवानपि योजनया एव अधीयानः स्याद्, गतः कालः न पुनरायाति, इति (vi) सूक्ति सर्वदा अपि (vii) स्मर, (viii)

भवन्मित्रम्
- नरेन्द्रः

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 25

उत्तरः- मञ्जूषाः- नालीनां, सुन्दरम्, स्वच्छता, कदा
श्वः, वामतः, आरभ्य, त्वम्

महेशः- निरञ्जन! (i) श्वः रविवासरः, तव का योजना वर्तते?

निरञ्जनः- अरे (ii) त्वम् न जानासि? रविवासरे सर्वे मिलित्वा वसतेः स्वच्छता करणीयास्ति।

महेशः- अहो! उत्तमः विचारः। सर्वैः श्वः (iii) कदा गम्यते?

निरञ्जनः- प्रातः अष्टवादनात (iv) आरभ्य कार्यमिदम् भविष्यति।

महेशः- पूर्वं कस्य भागस्य (v) स्वच्छता करिष्यते।

निरञ्जनः- (vi) वामतः विद्यमानस्य अद्यस्य उद्यानस्य आदौ करिष्यामः।

महेशः- तेन तद् रमणीयम् (vii) सुन्दरम् च भविष्यति।

निरञ्जनः- (viii) नालीनाम् स्वच्छता योजनायां स्वीकृता स्व।

परीक्षक द्वारा प्रश्न अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 26 उत्तर:-

(i) ~~महिला कुए से जल लाती है।~~ → ~~महिला कूपात् जलम् आनयति।~~

(ii) तुम भी जाओ। → त्वमपि गच्छ।

(iii) मैं गणित व विज्ञान पढ़ता हूँ। → अहं गणितम् विज्ञानम् च पठामि

(iv) मित्र को दूध अच्छा लगता है। → मित्राय दुग्धम् रोचते।

(v) मैं ज्ञानी हूँ। → अहम् ज्ञानी अस्मि।

प्र० 27 उत्तर:-

मञ्जूषा :- शिवस्य, मनोहरः, पृष्ठतः, निकषा, सुन्दराणि, तरन्ति

(i) पर्वतस्य (i) निकषा ग्रामः अस्ति।

(ii) ग्रामे (ii) सुन्दराणि भवनानि सन्ति।

(iii) मध्ये च भगवतः (iii) शिवस्य देवालयोऽस्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) पर्वतम् (iv) पृष्ठतः एका नदी प्रवहति ।

(v) ग्राम जनाः नद्याम् (v) तरन्ति ।

(vi) ग्रामस्य विद्यालयः अतीव (vi) मनोहरः अस्ति ।

प्र० 28 उत्तर

(i) एकदा एकः मकरः नद्याम् वसति स्म ।

(ii) नद्याः तटे फलोपेतः जम्बूवृक्षः आसीत् ।

(iii) तस्य शाखायां वानरः वसति स्म ।

(iv) मकरः वानरेण पातितानि मधुरफलानि आस्वाद्य अचिन्तयत् ।

(v) "फलानि अतिमधुराणि" अतः ~~वानर~~ वानर हृदयन्तु अतीव मधुरम् स्यात् अतः वानर हृदयं खादामि ।

(vi) वानरः मकरस्य प्रयासम् बुद्धि चातुर्येण विफलीकृतवान् ।

(समाप्त)